International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
March-April - 2017, Volume-4, Issue-2
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

सरकारी एवं गैर—सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन

दुष्यन्त
सहायक आचार्य
नोएडा कॉलिज ऑफ फिजीकल एजूकेशन
गौतमबुद्ध नगर

सारांश—

मूल्य एक अमूर्त सम्प्रत्यय है तथा व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित एवं नियन्त्रित करते हैं। यह समाज द्वारा स्वीकृत होते हैं। मूल्यों के द्वारा ही समाज में विश्वास, आदर्श, आस्था व श्रद्धा, नैतिक नियम एवं व्यवहार के मानदण्ड निर्धारित किए जाते हैं। मूल्यों को कम या अधिक महत्व मानव की इच्छा पर निर्भर होता है। व्यक्ति इनमें से कुछ को अधिक महत्व देते हैं कुछ को अपेक्षाकृतत कम। प्रस्तुत शोध पत्र में सरकारी एवं गैर—सरकारी प्राथमिक विद्यालय के 100 विद्यार्थियों का चयन शोध हेतु सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया। प्राप्त आंकड़ों की सांख्यिकीय गणना के उपरान्त पाया गया कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की अपेक्षा गैर—सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का स्तर अधिक उच्च स्तरीय है। इसका प्रमुख कारण विद्यालय का वातावरण एवं शिक्षकों का अनुशासन है।

कुंजी शब्द— प्राथमिक विद्यालय एवं सामाजिक मूल्य।

प्रस्तावना—

जीवन में सफलता का आधार वास्तव में शिक्षा में निहित है। समय के साथ—साथ शिक्षा के उद्देश्य भी बदलते रहते हैं। स्वतन्त्र उत्तर भारत में शिक्षा को समाजीकरण का सशक्त साधन मानते हुए इसके द्वारा व्यक्तितकता व नागरिकता के गुणों को विकसित करने का प्रयत्न किया गया। आजकल हम शिक्षा को व्यवसाय उन्मुख करने का प्रयत्न कर रहे हैं। उत्तम सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण व हस्तान्तरण पर भी ध्यान दिया जा रहा है शिक्षा द्वारा विकल्पों में से उत्तम को चुनने की कुशलता विकसित होनी चाहिए। उत्तम विकल्प के चयन की प्रक्रिया वास्तव में मूल्य प्रक्रिया है। आज हम पूर्ण स्वतन्त्र रहकर अपने हित को सर्वोपरि रखकर विकल्प चुना करते हैं परन्तु वास्तव में ऐसा होना नहीं चाहिए स्वतन्त्रता का आशय यह नहीं कि चुनाव के समय हम देश हित या के सामाजिक हित पर ध्यान नहीं दें। पूरी शिक्षा वास्तव में मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया है।

आधुनिक जीवन की जटिलता के कारण हमारा जीवन सरल नहीं रह पाया। इसके ऊपर अनेक दबाव है जो हमारे अन्दर तनाव की स्थिति उत्पन्न कर देते हैं। हमारे लिए मुख्य कार्य यह रह जाता है कि हम तनावों को कम करें चाहे इसके लिए हमें ऐसे कार्य भी करने पड़े जोकि अन्य व्यक्तियों के लिए या समाज के लिए अनुचित हो ।

समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। वर्तमान समय में यह संबंध कमजोर होते जा रहे हैं। भारत की सामाजिक व्यवस्था अत्यन्त स्थिर, अनियमित और अनास्था प्रधान होती जा रही है। पूरे देश में हिंसा व भ्रष्टाचार की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रहे हैं। सम्पूर्ण राष्ट्र जातिवाद, क्षेत्रवाद, प्रान्तीय वाद, तथा साम्प्रदायिकता जैसी विघटनकारी प्रवृत्तियों से जूझ रहा है।

देश काल व परिस्थितियाँ मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। मूल्य किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर होते हैं। प्राचीन भारतीय समाज सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहयोग एवं शान्ति का उपासक था। प्राचीन भारतीय समाज के मूल्य धर्म एवं के आध्यात्मिकता पर आधारित होते थे। आज का युग वैज्ञानिक है और उसमें मूल्य नैतिकता से प्रभावित न होकर भौतिकता से जुड़ गए हैं। आज के बालक कल के देश का भविष्य होंगे देश की उन्नति का सम्पूर्ण बोझ उन्हीं के कन्धों पर होगा। अतः समाज के प्रत्येक नागरिक का यह परम कर्तव्य है कि बालकों को ऐसी शिक्षा एवं संस्कार प्रदान किए जाए जो न केवल उन्हीं के लिए सार्थक हो बल्कि वे समाज व देश दोनों के लिए उपयोगी सिद्ध हो। चूंकि मूल्य ही वे साधन है जिनके माध्यम से बालक अपना, अपने समाज एवं देश का विकास कर सकता है।

विद्यालय को समाज का लघु रूप कहा गया है परन्तु यह विद्यालय की बदकिस्मती है कि वह आज शिक्षार्थियों में अनुशासन स्थापित करने में असफल होता जा रहा है। विद्यालयों को चाहिए कि वे ऐसे उचित वातावरण का निर्माण करें कि जिससे बालकों में श्रेष्ठ मूल्यों को विकसित किया जा सके तथा राष्ट्रीय को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया जा सके। प्रस्तावना के अंत में हम यही कहना चाहेंगे कि मूल्यों का व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

मूल्यों की प्रकृति

मूल्य मानव के मूलधन होते हैं। दूसरे मूल्य एक समष्टि हैं जिसको व्यक्ति साथ लेकर चलता है। साथ ही एक माध्यम है जिसमें व्यक्ति पैदा होते हैं और विकसित होते हैं। व्यक्ति के उच्च आदर्शात्मक विचार के परिणाम स्वरूप जब उसकी कुछ आकांक्षाएं मूर्त रूप लेती है तो वे मूल्य के ही जाती हैं। दूसरे शब्दों में जब कोई इच्छा तथ्य यह सिद्धान्त रूप में रहती है तो वह आकांक्षा रहती है। लेकिन व्यावहारिक हेतु प्रेरक अर्थ में मूल्य बन जाती है। वास्तव में आकांक्षा है व्यक्ति के लक्ष्यों को निर्धारण करने वाली प्रेरणा शक्ति है।

समाज का प्रतिबिम्ब दर्शन के द्वारा होता है, जबकि समाज के दर्शन के अनुरूप मूल्यों का निर्धारण होता है। मूल्य ही मानव को उत्कर्ष की ओर ले जाते हैं। मानव जीवन में श्रद्धा विश्वास प्रतिबद्धता प्रेरणा आदि उदात्त भावों का संचरण करते हैं। मूल्यों के द्वारा जगत की संरचना की जाती है तथा उनकी व्यवस्था सुचारू रूप से चलाने में सहायक होते हैं। शाश्वत मूल्य सदैव यथावत रहते हैं जबकि समसामयिकी मूल्यों में परिवर्तन होता रहता है। अतः मूल्य के सम्प्रत्यय से यह स्पष्ट होता है कि मूल्य एक अमूर्त सम्प्रत्यय है तथा व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित एवं नियन्त्रित करते हैं। यह समाज द्वारा स्वीकृत होते हैं। मूल्यों के द्वारा ही समाज में विश्वास, आदर्श, आस्था व श्रद्धा, नैतिक नियम एवं व्यवहार के मानदण्ड निर्धारित किए जाते हैं। मूल्यों को कम या अधिक महत्व मानव की इच्छा पर निर्भर होता है। व्यक्ति इनमें से कुछ को अधिक महत्व देते हैं कुछ को अपेक्षाकृत कम जैसे **'अहिंसा'** का मूल्य जैन धर्म द्वारा स्वीकृत चरम लक्ष्य माना जाता है जिसको समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा बच्चे ग्रहण करते हैं।

मूल्यों का शाब्दिक अर्थ एवं परिभाषा

मूल्य शब्द अंग्रेजी भाषा वैल्यू शब्द का हिन्दी रूपान्तर है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा की अंसमतम से मानी जाती है। जिसे किसी वस्तु की उपयोगिता तथा महत्व के अर्थ में समझा जाता है।

सी.वी. गुड़ के अनुसार, 'मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक सामाजिक और सौंदर्य बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है लगभग सभी विचार मूल्यों के अभिषट चरित्र को स्वीकार करते हैं। किसी समाज के वे विश्वास, आदर्श, सिद्धन्त नैतिक नियम और व्यवहार मानदण्ड जिन्हें समाज के व्यक्ति महत्व देते हैं और जिन से उनका व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होता है उस समाज एवं उसके व्यक्तियों के मूल्य होते हैं।'

फ्लिंक के अनुसार, 'मूल्य मानक रूपी दण्ड हैं जिनके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थिति प्रिया विकल्पों में से चयन करने में प्रभावित होते हैं।'

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

हमारे देश ने विज्ञान अनुसन्धान, प्रौद्योगिकी कला और चिकित्सा के क्षेत्र में अत्यन्त सराहनीय सफलता हासिल की है। जिस पर आज हम गर्व का अनुभव भी करते हैं। लेकिन इस नए युग में हम अपने मूल्यों को खोते जा रहे हैं हमारे शिक्षक, अभिभावक, राजनीतिक दलों के सदस्य अधिकारी व कर्मचारी सभी मूल्य संकट के दौर से गुजर रहे हैं। जिस गति से मनुष्य जैसे जीवन्त प्राणी के मूल्यों में आस्था डगमगा या समाप्त हो रही है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि एक दशक के बाद ही लोगों का मूल्यों से विश्वास उठ जाएगा तथा समाज में नैतिकता का भी अन्त हो जाएगा। वर्तमान युवा पीढ़ी भावी समस्याओं का विश्वसनीय पूर्वानुमान नहीं लगा सकती। समाज में परिवर्तन की गति अनुमान से तेज भी हो सकती है हमें संस्कृति विहिनता, अमानवीयता व अलगाव से बचना है व विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा देनी है जो बालक व बालिकाओं को भविष्य के लिए तैयार करें। मूल्य परक शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न रूपों को वे उनके निहितार्थों को समझने में सक्षम बना सकती है तथा उनकी नैतिक निर्णय: क्षमता व मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को विकसित कर रही है। हमें शिक्षा को इस प्रकार मूल्य परक बनाना चाहिए कि विद्यार्थी भविष्य के लिए सुरक्षित तैयारी कर सकें।

मूल्य परक शिक्षा की अवधारणा अपेक्षाकृत आधुनिक तथा व्यापक है। कुछ मूल्यों को गाहा मानते हुए भी ग्रहण नहीं करते। कुछ मूल्यों में हमारा विश्वास ही नहीं है परन्तु हम उनके अनुरूप व्यवहार करने का दिखावा करते हैं। कुछ मूल्यों पर आधारित व्यवहार हम एक परिस्थिति में प्रकट करते हैं परन्तु दूसरी परि स्थिति मैं नहीं। सभी लोग मुल्ले अन्तर द्वण्द में फँसे नजर आते है। अत: सभी चाहते हैं कि जीवन को मूल्य आधारित बनाया जाए और यह शिक्षा के बिना संभव नहीं है। जीवन में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता को निम्नलिखित तर्कों के माध्यम से समझा जा सकता है।

1- आज सामाजिक जीवन में मूल्य परिलक्षित नहीं हो पा रहे है। मूल्यों पर अहवादिता व स्वार्थ परता के रोगाणुओं ने आक्रमण कर दिया है. मानव मन दिग्भ्रमित हो रहा नई शिक्षा नीति 1986 में भी यह स्वीकार किया गया है कि अनावश्यक मूल्यों के हास समाज में बढ़ रही कटुता के प्रति अधिक चिन्ता के कारण सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास के लिए शिक्षा को एक सशक्त साधन बनाने हेतु पाठ्यक्रम में पुन: समायोजन करने की आवश्यकता मुखरित हुई है।

2- आज हमारे देश में ही नहीं अपितु पूरे संसार में मूल्यों का हास हो रहा है। मूल्य के ह्रास का अर्थ है, समाज: द्वारा स्वीकृत आदर्श एवं मानदण्डों को अपने जीवन में न अपनाना। आज हम अपने पुराने मूल्यों को छोड़ते जा रहे हैं और नए मूल्यों को निश्चित नहीं कर पा रहे हैं इस परिस्थिति में भी मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है।

3- आज हम सब जो आचरण कर रहे हैं वह मूल्यविहिन है अत: अन्धकार में होने की कल्पना की जा सकती है। इस अन्धकार से बचने के लिए आज की पीढ़ी को ऐसी शिक्षा देनी होगी जो उनमें नैतिक निर्णय की क्षमता का विकास करें और आदर्श मूल्यों को स्वीकार करने तथा उसके अनुरूप आज करने के लिए तैयार कर सके।

4- आज हमारे देश में चारों और अनैतिकता व्याप्त है, बच्चों को इस अनैतिकता का विरोध करने तथा एक कुशल या नैतिकता से परिपूर्ण जीवन जीने के योग्य बनाने के लिए मुझे शिक्षा की आवश्यकता है। वर्तमान समय में अच्छे या बुरे यथार्थ एवं आदर्श के बीच लगातार संघर्ष चल रहा है। रतीश व्यक्ति आदर्शों एवं मूल्यों के अनुरूप ढ़लना चाहता है और बाधक वृत्तियों से बचना चाहता है परन्तु उसकी इस इच्छा की पूर्ति आधुनिक शिक्षा व्यवस्था नहीं कर पा रही है उसके पास मूल्यों का सर्व स्वीकृत सिद्धान्त नहीं है। शिक्षक स्वयं मूल्यों से अनभिज्ञ हैं ऐसी स्थिति में व्यक्ति की आकांक्षा की पूर्ति करने हेतु मुल्य शिक्षा आज के परिवेश में अत्यंत आवश्यक बन गई है।

5- मनुष्य के विवेक पर भौतिक पाश्चात्य संस्कृति के आक्रमण के कारण जीवन के पुरातन मूल्यों में हमारी आस्था समाप्त सी हो गई है। आधुनिक बन जाने की होड़ में शामिल भारतवासी पश्चिमी मूल्यों से प्रभावित होते हैं। आज के समय में आधुनिक व पुरातन मूल्यों में समन्वय लाने की चेष्टा करने की बहुत जरूरत है. बहुत ही संस्थाएं इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान पर रही हैं।

6- मनुष्य के विवेक पर भौतिक पाश्चात्य संस्कृति के आक्रमण के कारण जीवन के पुरातन मूल्यों में हमारी आस्था समाप्त सी हो गई है। आधुनिक बन जाने की होड़ में शामिल भारतवासी पश्चिमी मूल्यों से प्रभावित होते हैं। आज के समय में आधुनिक व पुरातन मूल्यों में समन्वय लाने की चेष्टा करने की बहुत जरूरत है बहुत ही संस्थाएं इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान पर रही हैं।

7- मनुष्य में अनुभूति करने की शक्ति है और वह मूल्यों को चुनाव करके अच्छा जीवन जी सकता है आज उसे अपने को समझने की आवश्यकता है इस कार्य को करने के लिए मूल्य शिक्षा उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

8- आज की परिस्थिति में समाज के सदस्यों में भावात्मक समाकलन सुनिश्चित करने व लोगों के मन में इंसानियत के वृक्ष को रोकने की सख्त जरुरत है इस कार्य को पूर्ण करने के लिए मूली शिक्षा अति आवश्यक है।

समस्या कथन

मूल्यों की शिक्षा का अर्थ शिक्षा की प्रक्रिया के द्वारा मूल्यों को विद्यार्थियों में विकसित करना है। क्यूंकि वर्तमान में विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्यन किया गया है। अत: शोध सम्बन्धी क्षेत्र के निर्धारण के पश्चात् समस्या का विधिवत कथन अर्थात अनुसन्धान का शीर्षक इस प्रकार बनता है—

सरकारी एवं गैर—सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के

सामाजिक मूल्यों का अध्ययन

शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण—

प्राथमिक विद्यालय—

सरकार एवं जनसामान्य द्वारा संचालित किए जाने वाले कक्षा पाँच तक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालय/शिक्षण संस्थान

सामाजिक मूल्य—

सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य की उन्नति समाज में रहकर ही होती है। समाज में सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए मनुष्य को प्रेम, सहयोग तथा भावात्मक आश्रय की आवश्कता पड़ती है। मनुष्य प्यार चाहता है तो उसे अन्य लोगों को प्यार देना भी पड़ता है, वह सहयोग चाहता है तो उसे सहयोग देना भी पड़ता है, उसे भावात्मक आश्रय की आवश्यकता है तो उसे अन्य लोगों को भावात्मक आश्रय देना भी पड़ेगा। ये सभी मूल्य सामाजिक मूल्यों की श्रेणी में आते है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1- सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

2- सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र—छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

3- सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा पाँच के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन के परिकल्पनाएं

1- सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2- सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र—छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3- सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा पाँच के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन का सीमांकन

1- प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।

2- प्रस्तुत शोध अध्ययन मेरठ ब्लॉक के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की केवल कक्षा पाँच तक के विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।

3- प्रस्तुत शोध अध्ययन सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों तक सीमित किया गया है।

4- प्रस्तुत शोध अध्ययन सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं तक सीमित किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की शोध विधि

एक शोध कार्य बिना किसी तकनीकी या विधि के पूर्ण नहीं हो सकता। शोध विधि ही हमारे शोध कार्य को गति प्रदान करती है। शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध की प्रकृति एवं आवश्यकता के अनुसार शोध अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध का न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य मेरठ जिले के माध्यमिक स्तर के 10 विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों पर किया गया है, जिसमें 50 छात्र व 50 छात्रायें चयनित की गई। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु चयनित प्राथमिक विद्यालयों का विवरण निम्नवत् है–

सरकारी प्राथमिक विद्यालय

1- प्राथमिक विद्यालय, जैनपुर, मेरठ।

2- प्राथमिक विद्यालय, औरंगशाहपुर, डिग्गी।

3- प्राथमिक विद्यालय, लिसाड़ी, मेरठ।

4- प्राथमिक विद्यालय, मोहकमपुर, मेरठ।

5- प्राथमिक विद्यालय, परतापुर, मेरठ।

गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय

1- सरस्वती शिशु मन्दिर, शास्त्रीनगर, मेरठ।

2- ग्लोबल पब्लिक स्कूल, दिल्ली बाईपास रोड, मेरठ।

3- सिटी लुक पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, मेरठ ।

4- स्वामी विवेकानन्द इण्टर कॉलेज, शास्त्रीनगर, मेरठ।

5- मेरठ पब्लिक स्कूल, शास्त्रीनगर, मेरठ।

तालिका संख्या– 4.1

सरकारी व गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
सरकारी	50	17.18	1.87	**3.60****	**0.01**
गैर–सरकारी	50	18.34	1.30		

** **'टी' मूल्य 3.760> तालिका मूल्य 2.58 (0.01 सार्थकता स्तर)**

तालिका संख्या 4.1 के अर्न्तगत सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 3.60 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है जबकि 0.01

सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 2.58 है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 18.34 जो गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का है तथा निम्न मध्यमान 17.18 जोकि सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अपेक्षा गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का स्तर उच्च पाया गया है।

अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित शून्य परिकल्पना (H_01) **'सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'** अस्वीकृत की जाती है। अर्थात सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के मध्यमान में सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या– 4.2

सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
छात्र	50	17.59	1.69	2.22*	0.05
छात्रायें	50	18.33	1.64		

* **'टी' मूल्य 2.22 > तालिका मूल्य 1.96 (0.05 सार्थकता स्तर)**

तालिका संख्या 4.2 के अर्न्तगत सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के सामाजिक मूल्यों के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 2.22 सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 18.33 जो छात्राओं से सम्बन्धित है तथा निम्न मध्यमान 17.59 जोकि छात्रों का है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं की अपेक्षा छात्रों के सामाजिक मूल्यों का स्तर निम्न पाया गया है।

अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित शून्य परिकल्पना (H_02) **'सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'** अस्वीकृत की जाती है। अर्थात सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं के सामाजिक मूल्यों के मध्यमान में सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या– 4.3

सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा पाँच के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर

सरकारी	50	17.60	1.83	**2.59****	**0.01**
गैर– सरकारी	50	18.43	1.34		

** **'टी' मूल्य 2.59 > तालिका मूल्य 2.58 (0.01 सार्थकता स्तर)**

तालिका संख्या 4.3 के अन्तर्गत सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा पाँच के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 2.59 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है जबकि 0.01 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 2.58 है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 18.43 जो गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों से सम्बन्धित है तथा निम्न मध्यमान 17.60 जो सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों से सम्बन्धित है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में सरकारी प्राथमिक विद्यालय के कक्षा पाँच के विद्यार्थियों की अपेक्षा एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के कक्षा पाँच के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का स्तर उच्च पाया गया है।

अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित शून्य परिकल्पना (H_03) 'सरकारी एवं गैर– सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा पाँच के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है। अर्थात सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा पाँच के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के मध्यमान में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

1- सरकारी व गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर होता है। शून्य परिकल्पना 0.01 के सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है।

2- सरकारी व गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर होता है। शून्य परिकल्पना 0.05 के सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है।

3- सरकारी व गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालय के कक्षा पाँच के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर होता है। शून्य परिकल्पना 0.01 के सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है।

दोनों स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों पर वातावरण का विशेष प्रभाव पड़ता है। इसका मुख्य कारण सम्भवतः यह पाया कि गैर–सरकारी विद्यालय में शिक्षक तथा विद्यार्थी अनुशासन के प्रति अधिक जिम्मेदारी महसूस करते हैं जबकि सरकारी विद्यालयों में यह जिम्मेदारी कम महसूस की जाती है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची–

- पाठक, पी०डी० 'शिक्षा मनोविज्ञान' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- शर्मा, आर०ए० (2017) 'शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व' आर०लाल पब्लिकेशन, मेरठ।
- श्रीवास्तव, डा०एन०वर्मा, डा० प्रीति (2012) 'मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।

- वैस्ट, जॉन डब्ल्यू और क्हान, जेम्स, वी. (2002) 'रिसर्च इन एजूकेशन': प्रेंटिस, हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लि., नई दिल्ली
- गुडबार एंव स्केटस (1965) 'मेथडोलॉजी ऑफ रिसर्च साइकोलॉजी एण्ड सोशलॉजी' न्यूयार्क।
- लोकेश (2007) 'शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली' विकास पब्लिशिंग हाउस, प्रा०लि०।